Volume-1, No.2 Aug.-2014, pp.113-116

भारतीय जीवन मूल्यों में आदर्शवाद के शास्वत मूल्य एवं शैक्षिक उद्देश्यों का समावेश

डॉ0 गिरीश कुमार वत्स, प्रवक्ता शिक्षा विभाग
आई.आई.एम.एस. मेरठ उत्तर–प्रदेश भारत।

मानव मूल्य एक ऐसी आचरण संहिता या सद्गुण समूह है जिसे अपने संस्कारों एवं पर्यावरण के माध्यम से अपनाकर मनुष्य अपने निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपनी जीवन पद्धति का निर्माण करता है तथा अपने व्यक्तित्व का विकास करता है।

जीवन मूल्यों में मनुष्य की धारणाएँ, विचार, विश्वास, मनोवृत्ति आस्था आदि समेंकित होते हैं। ये मूल्य एक ओर व्यक्ति के अन्तकरण द्वारा नियन्त्रित होते हैं, तो दूसरी ओर उसकी संस्कृति एवं परम्परा द्वारा निस्सृत तथा परिपोषित होते हैं। निष्कर्षतः जीवन मूल्यों के सन्दर्भ में कहा जा सकता है–"जीवन मूल्य अर्थात् मानवता की कसौटी, जीवन मूल्य अर्थात् सृजनता के मूल तत्व, जीवन मूल्य हैं, मानवता के व्यवस्थापक लक्ष्य, जीवन मूल्य हैं सीमा रेखा पशुता और मानवता के मध्य की, जीवन मूल्य है महामानवों के पदचिह्न उनकी प्रेरणायें, निष्कर्षतः जीवन मूल्य अर्थात् नारायणत्व तक पहुँचने के लिए निर्मित सोपान।"

भारतीय शैक्षिक नैतिक सामाजिक आध्यात्मिक आदि प्रक्रिया की उपादेयता एवं औचित्य के साथ जुड़ा हुआ एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि भारतीय जीवन मूल्य क्या है? कैसे हैं? और कैसे होने चाहिए? इन प्रश्नों का सबसे सही और सटीक उत्तर यही है कि भारतीय जन साधारण ने जीवन की समस्त प्रक्रिया व समग्र जीवन के प्रति अपना दृष्टिकोण तथा जीवन की क्रिया विधि का निर्धारण अपने सांस्कृतिक आविर्भाव से ही अपने नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक मूल्यों के आधार पर किया है।

भारतीय संस्कृति अपने उद्भव काल से ही मूल्यवाहक व मूल्यधारक जीवन व्यवस्था के रूप में विख्यात रही है। जिसमें दो प्रकार के जीवन मूल्यों शाश्वत तथा परिवर्तमान जिन्हें क्रमशः सनातन धर्म युग धर्म के रूप में जाना जाता है की प्रतिष्ठा की गई है। युगधर्म अथवा परिवर्तमान मूल्य वे हैं जो देशकाल, परिस्थिति के अनुसार निर्धारित होते हैं। जबकि शाश्वत अथवा सनातन मूल्यों की प्रतिस्थापना में देशकाल अथवा परिस्थिति का प्रभाव नहीं होता। ये वे सरल सहज व्यवस्थायें हैं, जो मन आचरण तथा रूचियों का परिष्करण कर मानव के अन्तस को प्रकाशित करती है तथा उसे पशुता से मानवता की ओर अग्रसर कर, उसका नैतिक उत्थान करतीं हैं। शाश्वत तथा सनातन मूल्य अपनी प्रकृति से सामाजिक सर्वसमावेशक तथा समन्वयकारी होते हैं। तथा मनुष्य की समस्त अन्तः शक्तियों का विस्तार कर जीवन की पूर्णता की प्राप्ति में सहायक होते हैं।

भारतीय जीवन पद्धति में 'पुरूषार्थ चतुष्ट्य' को सर्वोच्च जीवन मूल्यों के रूप में प्रत्यक्षीकृत किया जाता रहा है। 'धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष' रूपि ये चारों पुरूषार्थ भारतीय जीवन परम्पराओं में जीवन मूल्य के रूप में प्रवाहमान रहे हैं। जिनमें धर्म व मोक्ष को उच्च तथा काम व अर्थ को निम्न जीवन मूल्य माना गया है। भारतीय जनमानस ने मुख्यतः इन्हीं चार आधारभूत जीवन मूल्यों का अध्ययन कर व्यवहारकुशलता के अद्भुत मानदण्डों व अलौकिक मानवता का निर्माण किया है। पुरूषार्थ चतुष्ट्य रूपी जीवन मूल्य प्राचीन भारतीय परम्परा के धार्मिक व सैद्धान्तिक रूप से उद्भूत हुए तथा शीध्र ही सांस्कृतिक अंग के रूप में प्रतिष्ठित हो गए। बाद में ये भारतीय जनमानस के व्यावहारिक जीवन का विशिष्ट एवं अभिन्न अंग बने, कारण–भारतीय जीवन पद्धति की दो प्रक्रियाओं वर्ण तथा आश्रम का नीतिगत मूल्यपरक तथा व्यावहारिक व्यवस्थापन बिना पुरूषार्थ चतुष्ट्य के सम्भव नहीं था। भारतीय जीवन मूल्यों का वर्गीकरण अंग्रांकित आरेख में स्पष्टतः किया गया है–

सनातन भारतीय जीवन मूल्यों का वर्गीकरण

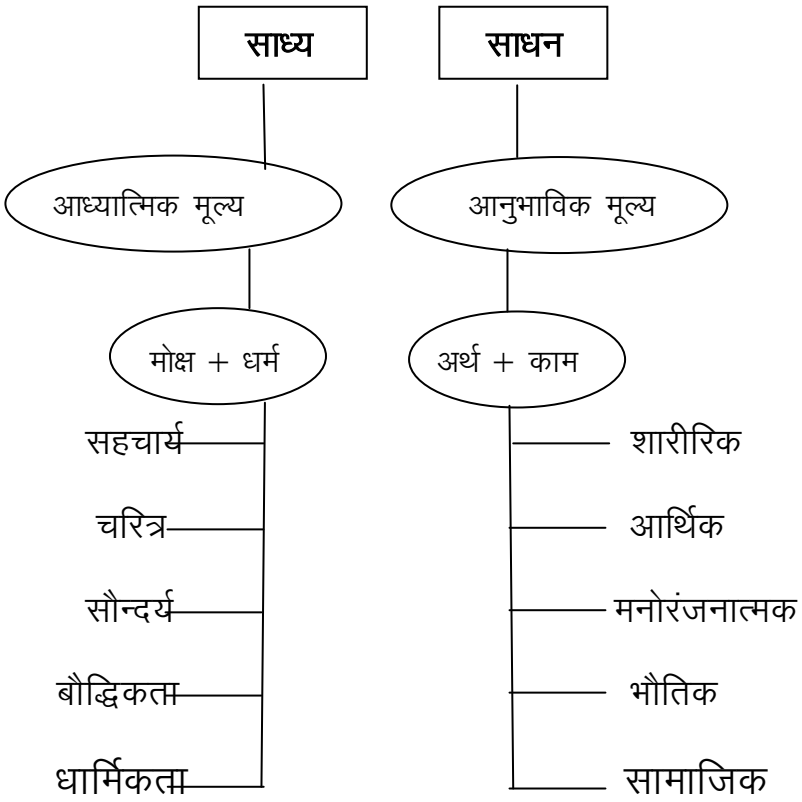

अभिप्राय यह है कि भारतीय पद्धति में पुरूषार्थ अर्थात् मोक्ष, धर्म, अर्थ, काम ही वे साध्य तथा साधन हैं जो जीवन संचालन नैतिक विचारणा के माध्यम से करने में मानव मात्र की सहायता करते हैं। मोक्ष, धर्म अर्थ, काम रूपी ये सर्वोच्च भारतीय जीवन मूल्य सामाजिक दृष्टि से भी स्वीकार्य तथा लोकमंगलकारी सिद्ध हुए हैं।

नीचे प्रदर्शित किये गये आरेख के अनुसार सर्वोच्च भारतीय जीवन मूल्य मोक्ष, आत्मानुभूति से सम्बन्धित है। आत्मानुभूति का सरलतम अर्थ सांस्थारिक व्यवस्था में सत्यम, शिवम्, सुन्दरम् की अनुभूति से हैं, जिसमें सत्य का सम्बन्ध ज्ञान से है। जिसके अनुसार व्यक्ति विश्व के सत्य तत्व की खोज हेतु आजीवन प्रयासरत रहता है शिव का सम्बन्ध कलयाणकारी भावना तथा विश्वकल्याण हेतु कर्म से है। सुन्दरम् का सम्बन्ध परम् सौन्दर्य की अनुभूति से है। जिसके द्वारा व्यक्ति आत्मिक आनन्द की अनुभूति करने में सफल होता है। गीता में इसे ज्ञान कर्म, भक्ति योग के रूप में बताया गया है।

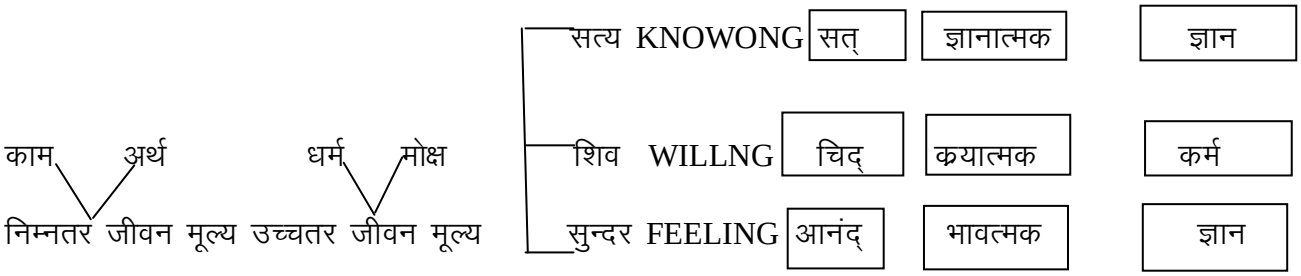

पुरूषार्थ चतुष्ट्य में वर्णित द्वितीय मूल्य अर्थ मनुष्य की आर्थिक तथा भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक है। व्यक्ति को अपने सामाजिक एवं भौतिक विकास की प्रक्रिया को सुसंगठित ढंग से चलाने के लिए यह आवश्यक है कि वह अपनी अर्थ सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करे। बिना आर्थिक मूल्यों को धारण किए मनुष्य अपना सामाजिक, आर्थिक विकास नहीं कर सकता।

भारतीय जीवन व्यवस्था के संचालक पुरूषार्थ चतुष्ट्य रूपी शाश्वत जीवन मूल्यों में काम तथा अर्थ को निम्नतर जीवन मूल्य माना गया है, किन्तु यहाँ यह कह देना समीचीन है कि जीवन में धर्म तथा मोक्ष रूपी उच्चतर जीवन मूल्यों को यदि जीवन का साध्य माना जाये तो उस स्थिति में काम तथा अर्थ रूपी निम्नतर जीवन मूल्य वे साधन हैं, जिनकी सहायता के बिना इस साध्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता।

पुरूषार्थ चतुष्ट्य का तृतीय तथा उच्चतर पुरूषार्थ धर्म संस्कृति का अभिन्न अंग है। जिसका व्यावहारिक रूप नीति है। नैतिक विचारणा बहुत सीमा तक मानव मूल्यों के स्पष्टीकरण में सहायक सिद्ध होती है। अर्थ तथा काम भावना यदि धर्म प्रेरित व धर्म संचालित हो तो वे उच्चतर जीवन मूल्य मोक्ष की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होती हैं। कहा भी गया है– "धर्मात् अर्थश्य कामश्चः सधर्मकिन्न सेव्यते।" अर्थात् कर्म से ही सम्पत्ति तथा कामनाओं की प्राप्ति होती है। यदि धर्म के शाब्दिक अर्थ की ओर जायें तो पायेंगे कि "धार्यते जनैरिति धर्माः"। अर्थात् मनुष्यों द्वारा जिसे धारण किया जाता है, वही धर्म है। धर्म वह है जिसका आचरण करने से, जिसके धारण करने से, मनुष्य जीवन सुव्यवस्थित रूप से चलता है तथा मानवाचरण तथा समाजरक्षण की दृष्टि से धर्मधारण आवश्यक है।

धर्म व्यक्ति की आवश्यकता और समाज की मांग है। समाज की सुव्यवस्था और सुरक्षा के लिए धार्मिक आस्थाओं का उत्कर्ष तथा धर्म मर्यादाओं का पालन नितान्त आवश्यक है। आदर्श जीवन जीने की, लोकमंगल के लिए उत्कृष्ट अनुदान प्रस्तुत करने की; आन्तरिक उमंग मात्र धर्म प्रेरणा से ही उत्पन्न होती है। वैसे तो धर्म शब्द नाना अर्थों में व्यवहृत होता है, परन्तु दार्शनिक दृष्टि से धर्म का अर्थ स्वभाव की ओर इंगित करता है। सृष्टि के पांच नियामक तत्व अग्नि जल, आकाश, भूमि, वायु में अग्नि का धर्म गर्मी है तथा उसका स्वभाव उष्णता, जल का धर्म शीतलता है तथा उसका स्वभाव नमी है। स्वभाव मनुष्यकृत न होकर ईश्वर प्रदत्त होता है। मनुष्य की कुछ स्वाभाविक मर्यादायें हैं, जिन्हें दार्शनिक दृष्टि से धर्म कहा गया है। भारतीय जीवन परम्परा में धारण करने योग्य इन्हीं धर्माचरणों को मानवता के व्यवस्थापक लक्षणों अर्थात् मूल्यों के रूप में प्रत्यक्षीकृत किया जाता रहा। धर्म का वास्तविक तात्पर्य है मानवीय चेतना में ऐसी सत्प्रवत्तियों का समावेश जो सदाचरण और कर्तव्यपालन के रूप में वातावरण को उल्लासपूर्ण बनाने में सफल हो सकें।

मोक्ष जो कि पुरूषार्थ चतुष्ट्य का उच्चतम जवन मूल्य तथा जीवन का सर्वोत्कृष्ट लक्ष्य है, आत्मा की प्रकृति से जुड़ा हुआ है। बुद्ध का निर्वाण, तथा महावीर का कैवल्य मोक्ष का ही प्रतिरूप हैं। मोक्ष व्यक्ति के अंतिम लक्ष्य के रूप में अंमित सत्व, सार्वभौम आत्मा या परमात्मा अथवा ब्रह्मा से सामीप्य, अथवा तादात्म्य से सम्बन्धित है। मोक्ष एक आध्यात्मिक मूल्य है, जिसे मूल्य परिप्रेक्ष्य में सर्वोच्च प्रतिष्ठा प्रदान की गयी है। मोक्ष जीवन का उच्चतम लक्ष्य है तथा अन्य निम्नतर मूल्य मोक्ष की प्राप्ति में साधन के रूप में कार्य करते हैं।

संस्कृति तथा मूल्य एक दूसरे के पूरक होते हैं। एक ओर जहाँ संस्कृति मूल्यों का स्रोत है वहीं दूसरी ओर विकासमान मूल्य भी संस्कृति का पोषण एवं विकास करते हैं। तथा युगानुरूप उनमें वांछित सुधार एवं परिष्करण होता रहता है। संस्कृति में ही जीवन मूल्यों के निर्णायक घटक विद्यमान होते हैं जो मानव जीवन में आचरण तथा व्यवहार को नियंत्रित–नियमित करते हैं। अपने प्राचीन साहित्य में तथा विविध सामाजिक परंमपराओं में हमें इन जीवन मूल्यों का उल्लेख हमें विभिन्न चरित्रों एवं प्रसंगों के माध्यम से मिलता है। प्रस्तुत अध्याय में वर्णित किए गए जीवन मूल्यों का तर्काधार भारतीय जीवन सभ्यता एवं संस्कृति होने के कारण उन्हें भारतीय जीवन मूल्यों के रूप में वर्णित करना समीचीन एवं औचित्य पूर्ण है। ये भारतीय जीवन मूल्य जीवन चक्र को प्रभावित करते हैं। भारतीय जीवन मूल्य चक्र अग्रांकित आरेख द्वारा समझा जा सकता है।

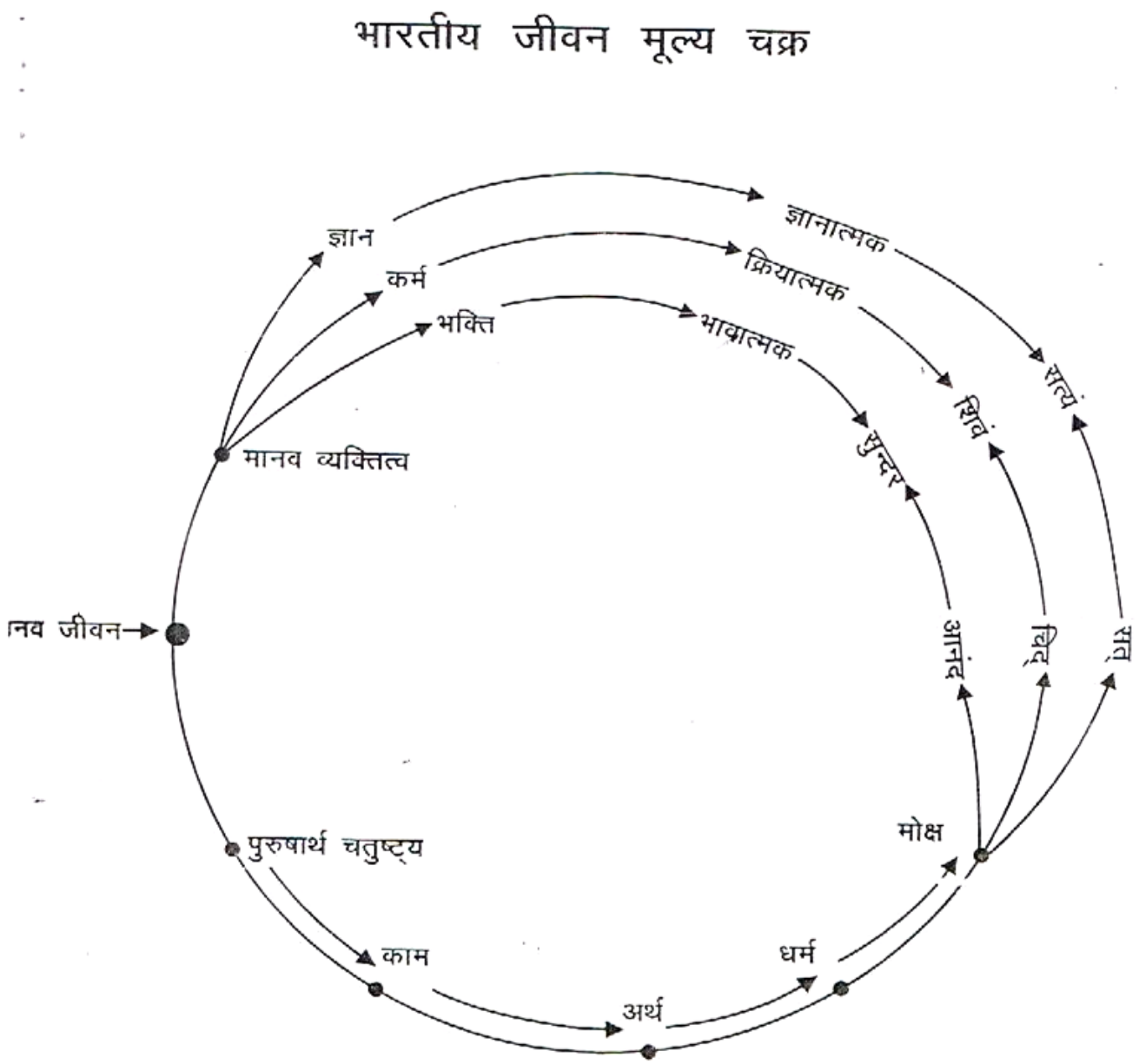

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शिक्षा विद्या– श्रीराम शर्मा आचार्य।
2. रामायण की प्रगतिशील प्रेरणा– श्रीराम शर्मा आचार्य।
3. वेदान्त दर्शन – आचार्य रजनीश।
4. शिक्षा के अनुप्रयोग – ओशो।